JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों की भाषा एवं शैली : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ.सियाराम मीणा
प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
राजकीय महाविद्यालय,कोटा (राज.)

सारांश

उपन्यासकार प्रसाद की भाषा विपुल भाषिक वैभव से सम्पन्न है। सर्जनात्मक भाषा का साधारणीकृत रूप उनकी कृतियों में परिलक्षित होता है। उपन्यासों की भाषा कथा काल और पात्रों के अनुरूप है। काव्यात्मकता, चिन्तनात्मकता, भावात्कता, चित्रात्मकता की भाषायी सहजा से प्रसाद की भाषा भावाभिव्यंजक प्रतीत होती है। ''प्रसाद की भाषा में उनकी चेतना का पूर्ण प्रतिबिम्म्ब देखा जा सकता है। जब वे विचार और चिन्तन की गहराइयों में पैठकर साहित्य, कला तथा दार्शनिक विषयों में अभिव्यक्ति देते हैं, तब भाषा का स्वरूप योक्तिक, संयमित, गंभीर एवं संस्कृत निष्ठ हो जाता है। जब ऐतिहासिक तथ्यों को अतीत के अंधकार से निकाल कर प्रकाश में ले आते हैं तो भाषा में इति वृतात्मकता, तार्किकता, सूत्रशैली और विश्वास जनित दृढ़ता झलकती है।'' वास्वव में प्रसाद की भाषा अपने आप में पूर्ण है। भाषा पर उनका पूरा अधिकार है। उनकी भाषा शैली अपने आप में अलग और नवीन वैशिष्ट्य से सम्पन्न है। प्रसाद की भाषा अपने युग की प्रतिनिधि भाषा है उनकी भाषा की परिपक्वता में कोई भी सन्देह नहीं है ''प्रसाद की भाषा शैली कवि और चिंतक की भाषा शैली है..... भाषा उनकी अपनी है इतनी विशिष्ट है कि उनके सिवा किसी की हो ही नहीं सकती। उसके मौलिक तत्व उनके व्यक्तित्व से पूर्णतः संयोजित है इसमें सन्देह नहीं कि प्रसाद की सबसे बड़ी शक्ति उनकी भाषा शैली है।'' कहना न होगा कि प्रसाद की भाषा एक अलग ही सौन्दर्य और वैशिष्ट्य से सम्पन्न है। कहीं उनकी भाषा यथार्थ के दर्शन कराती हुई पूर्णतः अभिधात्मक प्रतीत होती है तो कहीं भावुक दृश्यों को दर्शाती हुई लक्षणा और व्यंजना से परिपूरित लगती है। कहीं कल्पना के वैभव से गगन को छूती है तो कहीं यथार्थ के दर्शन से हमारे ह्रदय को बेधती हुई प्रतीत होती है।

कुंजी शब्द : शब्द चयन, सामान्य भाषा, साहित्यिक भाषा, सर्जनात्मक भाषा, काव्यात्मकता, चिन्तनात्मकता, भावात्कता, चित्रात्मकता, व्यंग्यवक्रता

भूमिका :

''पत्थर से प्रतिमा गढ़ने''[1] का जैसा क्रम है वैसा ही सामान्य भाषा से साहित्यिक भाषा गढ़ने का क्रम है। रचनाकार सामान्य भाषा को विशिष्ट रूप आकार और व्यक्तित्व प्रदान करता है। सर्जनात्मक भाषा में वह जादू जैसी शक्ति आ जाती है, जिससे रचनाकार जो दिखाना चाहता है पाठक भी उसे देखने में समर्थ हो जाता है। ''शब्द शव की तरह निष्क्रिय रहता है पर प्रयोग द्वारा उसमें चिर्चित का संचार हो जाता है।''[2] भावों की स्थिति को भाषा में गति प्रदान करती है। सर्जनात्मक भाषा भाव और विचार सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम है। भाषा के विविध रूपों का निदर्शन उपन्यास में हम पा सकते हैं।

उपन्यास साहित्य की गद्यात्मक कथात्मक विद्या है। जीवन की सच्चाइयों को कथा सूत्र में पिरोता उपन्यास भाषा के विविध विशिष्ट रूपों को दर्शाता है। भाषा के भावात्मक, चित्रात्मक, प्रतिकात्मक, बिम्बात्मक, विचारात्मक और विश्लेषणात्मक रूपों का चित्रण अपनी कृति में करता है। संकेतात्मक डायरी, पात्र और वर्णनात्मक इत्यादि शैलियां भी उपन्यास के विविध भाषिक आयामों को स्पर्श करती है। विचाराभिव्यक्ति, भावाभिव्यक्ति और सर्जनात्मकता से ही भाषा सर्व ग्राह्य होती है।

भाषा : शैलीगत वैविध्य

उपन्यासकार प्रसाद की भाषा विपुल भाषिक वैभव से सम्पन्न है। सर्जनात्मक भाषा का साधारणीकृत रूप उनकी कृतियों में परिलक्षित होता है। उपन्यासों की भाषा कथा काल और पात्रों के अनुरूप है। काव्यात्मकता, चिन्तनात्मकता, भावात्कता, चित्रात्मकता की भाषायी सहजा से प्रसाद की भाषाा भावाभिव्यंजक प्रतीत होती है। जीवन के तथ्यों को प्रकट करने वाली सूक्तियों से तो इनकी भाषा में चार चांद लग गये हैं।

प्रसाद का प्रथम 'कंकाल' उपन्यास व्यंग्यात्म्क वैशिष्ट्य से सम्पन्न, वाग्वैदग्ध्य से परिपूर्ण कृति है। 'तितली' की भाषा उसके कथा परिवेश के अनुकूल और पात्रानुरूप है। ऐतिहासिक 'इरावती' उपन्यास की भाषा कालानुरूप काव्यात्मक और भावाभिव्यंजकता से ओत–प्रोत भाषा है। वास्तव में प्रसाद की भाषा संस्कृत गर्भित तत्सम प्रधान भाषा है साथ ही यथार्थवाद से प्रेरित होने के कारण उनकी कृतियों में लोक प्रचलित भाषा का आग्रह, शब्दों का मार्मिक और सूक्ष्म अर्थ प्रकाशक चयन भी हुआ है।

''प्रसाद की भाषा में उनकी चेतना का पूर्ण प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है। जब वे विचार और चिन्तन की गहराइयों में पैठकर साहित्य, कला तथा दार्शनिक विषयों में अभिव्यक्ति देते हैं, तब भाषा का स्वरूप योक्तिक, संयमित, गंभीर एवं संस्कृत निष्ठ हो जाता है। जब ऐतिहासिक तथ्यों को अतीत के अंधकार से निकाल कर प्रकाश में ले आते हैं तो भाषा में इति वृतात्मकता, तार्किकता, सूत्रशैली और विश्वास जनित दृढ़ता झलकती है।''[3] वास्वव में प्रसाद की भाषा अपने आप में पूर्ण है। भाषा पर उनका पूरा अधिकार है। उनकी भाषा शैली अपने आप में अलग और नवीन वैशिष्ट्य से सम्पन्न है।

1.भाषा की भावात्मक शैली

प्रसाद की प्रधान शैली है– भावात्मकत शैली। वे मूलतः कवि है, इसलिए उनका समस्त साहित्य अथ से इति तक गहन भावात्मकता से आविष्ट है। भागवत प्रवाह पूर्णता इनके उपन्यासों की महत्वपूर्ण विशेषता है। 'कंकाल' में भावविह्वल हो 'मंगल स्वप्नावेश में बर्राता है'' कौन कहता है कि तारा मेरी नहीं है? मैं भी उसका हूं तुम्हारे हत्यारे समाज की चिंता नहीं करता ... नहीं नहीं उसे मुझसे न छीने''[4] भाव विकल, भावातुर अवस्था का यह वर्णन सजीव प्रतीत होता है।

''उसके अंग अंग से लावण्य की ज्योति, यौवन का स्पुलिंग छूट रहा था, सुगंध से बसा उसका उत्तरीय खिसक चला था, जूड़े में लगी चमेली की माला महकने लगी थी। हां, मुख के विश्वासों में कादम्ब की भीनी महक, आंखों में मादकता के डोरे''[5] कालिन्दी के अनूठे सौन्दर्य का भावात्मक चित्र साकार हो गया है। मानवीय भावनायें, लेखक का संवेदनापूर्ण हृद्य ही उसके लेखन का प्रेरक होता है। उपन्यास मानव जीवन से जुड़े पक्षों के विशद् संवेदनात्मक वर्णन का दृढ़ आधार है। प्रसाद के उपन्यास भी जीवन के भावात्मक पक्षों को दर्शाते हैं।

भावमय काव्यात्मक प्रकृति चित्रण करता भाषा रूपः– जीवन के तथ्यों को दर्शाते हुए प्रसाद ने अपने उपन्यासों में सौन्दर्य मय प्रकृति के चित्रों का साकार किया है। यहां कवि प्रसाद की काव्यात्मकता मुखर हो गई है। ''रात बीत चली उषा का आलोक प्राची में फैल रहा था। उसने खिड़की से झांक कर देखा तो उपवन में चहल पहल थी। जूही की प्यालियों में मकरन्द मदिरा पीकर मधुपों की टोलियां लड़खड़ा रही थी, और दक्षिण पवन मौलासिरी के फूलों की कौड़ियां फेंक रहा था। कम से झुकी अलबेली बेलियां नाच रही थी मन की हार जीत हो रही थी।''[6] प्रकृति का सौन्दर्य युक्त भावमय अंकन यहां हुआ है। पात्रों की मनःस्थिति को दर्शाने में ये प्रकृति का वैभवमय वर्णन बहुत ही सजीव बन पड़ा है।

''पूस की चांदनी गांव के निर्जन प्रान्त में हल्कें कुहासें के रूप में साकार हो रही थी। शीतल पवन जब घनी अमराइयों में हरहराहट उत्पन्न करता तब स्पर्श न होने पर भी गाढ़े कुरतें पहनने वाले किसान अलावों की ओर खिसकने लगते''[7] शरदकालीन लक्षणा प्रधान काव्यात्मक प्रकृति चित्रण से समस्त वातावरण हमारे समक्ष साकार हो गया है।

2.भाषा का चित्रात्मक कौशल

उपन्यास त्रय की भाषा चित्रात्मक वैभव से सम्पन्न है। कृतिकार ने पाठक के समक्ष पात्रों के मनोभावों भय, हर्ष इत्यादि का चित्र साकार कर दिया है। माता–पिता से बिछड़ी बालिका की दशा का सजीव वर्णन ''यूथ से बिछड़ी हुई हरिणी के समान आंखों से इधर–उधर देख रही थी। कलेजा धक–धक कर रहा था आंखें छलछला रही थी और उसकी पुकार महाकोलाहल में विलीन हुई जाती थी तारा अधीर हो गई अब फूट–फूट कर रोने लगी''[8] असुरक्षित, अकेली भयातुर बालिका का चित्र हमारे समक्ष प्रत्यक्ष हो उठा हैं यहां एक भोली, सीधी सरला बालिका का चित्रात्मक वर्णन है वहीं एक कुटिल मनोवृत्ति में व्यक्ति का चित्र है ''कुतरी हुई छोटी–छोटी मूंछें, कुछ फूले हुए तेल से चुपड़े गाल जैसा कि उतरती हुई अवस्था के सुखी मनुष्यों में प्रायः दिखाई पड़ता है। नीचे का मोटा लटका हुआ ओंठ, बनावती हंसी हंसने की चेष्टा में व्यस्त, पट्टेदार बालों पर तेल से भरी पुरानी काली टोपी, कुटिलता से भरी गोल–गोल आंखे किसी विकट भविष्य की सूचना दे रही थी''[9] इस चित्र में एक साथ तहसीलदार का रूप, व्यक्तित्व, गुण–अवगुण सभी हमारे सामने सजीव हो उठे हैं। चित्रात्मकता की इस शैली से कृतिकार ने पात्रों का चरित्रगत और व्यक्तित्व की विशेषताओं का अंकन किया है।

3.भाषा का प्रतिकात्मक रूप

लेखक ने अपनी गहन संवेदनात्मक अनुभूतियां को विभिन्न प्रतिकात्मक आयामों द्वारा भी प्रकट किया है। पात्रों की मनःस्थिति को प्रतिकात्मक रूप में दर्शाया है। ''गाड़ी बीच के छोटे स्टेशन पर नहीं रूकी। स्टेशन की लालटेने जल रही थी तारा ने देखा एक सजा सजाया घर भाग कर छिप गया''[10] पिता द्वारा त्यागी गई बेघर तारा की पीड़ा और विवशता का सजीवांकन किया है।

''तितली की दिशा ठीक गांव के समीप रेल्वे लाइन के तार को पकड़े हुए उस बालक की सी थी जिसके सामने से डाक गाड़ी भकभक करती हुई निकल जाती है''[11] तितली में विवाह के समय तथा कथित कुछ व्यक्तियों द्वारा विरोध होना उस समय की मनोदशा का यह वर्णन सजीव बन पड़ा है। इन प्रतीकों के माध्यम से ही कलाकार पात्रों की वेदना की गहनता को दर्शाता है।

4.भाषा का मानवीकरण रूप

मानवीकरण काव्य विधा का एक महत्वपूर्ण गुण है। यदा–कदा यह हमें गद्य में भी परिलक्षित होता है यह भाषा के सर्जनात्मक रूप को दृष्टिगत कराता है। ''उस नीरस रजनी में पुरानी कोठी, बहुत दिनों के बाद तीन नये आगन्तुकों को देखकर जैसे व्यंग्य की हंसी हंसने लगी।''[12] मानवीकरण का यह सर्जनात्मक विशिष्ट भाषा रूप अच्छा बन पड़ा है।

5.भाषा की विचारात्मकता और विश्लेषणात्मकता

प्रत्येक कृति भावों और विचारों का ही सुपरिणाम है। कृतिकार की सामाजिक संवेदना उसके चिंतन का आधार है। प्रसाद के उपन्यास अभिनव विचारों से ओत–प्रोत है। जीवन धर्मी ग्रन्थ से रची–बसी उनकी भाषा विचारात्मकता और विश्लेषणात्मक से आविष्ट है।

''मैं मानता हूं कि पश्चिम एक शरीर तैयार कर रहा है किन्तु उसमें प्राण देना पूर्व के आध्यात्कवादियों का काम है। यही पूर्व और पश्चिम का वास्तविक संगम होगा, जिससे मानवता का स्त्रोत प्रसन्नधार बहा करेगा''[13] शुद्ध मानवीय दृष्टिकोण, समन्वयात्मकता के आविष्ट यह कथन उपन्यास की कलात्मकता में अभिवृद्धि करते हुए कृतिकार के विश्लेषणात्मक विचारों को दर्शाता है।

ऐतिहासिक कृति इरावती में कृतिकार के बौद्ध आर्य धर्म संबंधी विचारों के दर्शन होते है। ''प्राचीन आर्य वीर संस्कृति को लौटाने के लिए प्राचीन कर्मों को फिर से आरम्भ करना होगा, जिन्हें विवेक के अतिवाद के कारण हमने मानवता के लिए हानिकर समझ लिया है।''[14] गूढ़ विचार धर्मिता से युक्त यह कथन तत्कालीन समय को साकार करते हुए कृतिकार की विचारात्मक दृष्टि और चिन्तनात्मक भाषा को दर्शाता है।

6.व्यंग्यात्मक भाषा वैशिष्ट्य

प्रसाद की भाषा जहां स्वाभाविकता से आविष्ट है वहीं व्यंग्यवक्रता से भी सुशोभित है। 'कंकाल' उपन्यास को यदि हम सामाजिक व्यंग्यात्मक कृति कहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। 'कंकाल एक व्यंग्य पूर्ण उपन्यास भी है''[15] कंकाल के व्यंग्य हास्यपूर्ण नहीं अपितु सामाजिक विकृतियों पर किये चुटीले व्यंग्य है जो पाठकों को हृदय तक बेध जाते हैं। ''जिनके भगवान

सोने–चांदी से घिरे रहते हैं उन्हें रखवाली की आवश्यकता होती है''[16] इस व्यंग्य ने विकृत समाज का चित्र तो उपस्थित किया ही है लेकिन आज ही औपन्यासिक भाषा वैभव में चार चांद लगा दिये हैं।

7. सूचनात्मक, पत्र, डायरी इत्यादि भाषा शैलियां

भाव धर्मिता और विचार धर्मिता से आविष्ट से कृतियां विविध औपन्यासिक भाषायी शैलियों से ओत–प्रोत है। 'कंकाल' उपन्यास में निरंजन पत्र द्वारा तारा को अपनी पुत्री स्वीकार और अपने अपराधों के प्रति ग्लानि प्रकट करता है यहां पत्र शैली दृष्टिगत होती है। 'तितली' उपन्यास में शैला इन्द्रदेव की डायरी पढ़कर ही उनके अन्तर्द्वन्द्व को जान जाती है। उनके विचार आशंकायें इसी डायरी शैली से हम जान पाते हैं।

सूचनात्मक शैली का निदर्शन भी इनके उपन्यास त्रय में मिलता है ''मंगल देव अपने साथी खिलाड़ियों के साथ मैच खेलने लखनऊ आया था, उसका स्कूल आज विजयी हुआ था।''[17] यह सूचना जो मंगल के संबंध में है उपन्यास में मिलती है इसी प्रकार ''वह सचमुच सुन्दरी थी परन्तु दुर्बल अंग जैसे वह अपने बोझा से व्यस्त था''[18] कालिन्दी के बारे में लेखक द्वारा सूचनात्म्क शैली में उसके सौन्दर्य को व्यक्त किया है। सूचनात्मक शैली में लेखक स्वयं यह सूचना देता है।

5.2 जीवन धर्मी गन्ध से युक्त सारगर्भित सूक्तियां

सूक्तियॉ गहन जीवनसनुभवों का प्रतिफलन होती है। ''प्रसाद के साहित्य का एक बहुत बड़ा आकर्षण– वे सूक्तियां है जो सैंकड़ों की संख्या में उनकी रचनाओं के पृष्ठों पर फैली हुई है उनमें जीवन इस सरलता से प्रकट कर दिया गया है कि हमें आश्यर्च होता है''[19] प्रसाद का समग्र उपन्यास साहित्य इन सूक्तियों में आवृत है। जीवनगत अनुभवों की व्यापकता और गूढ़ तथ्यों को प्रकट करती ये सूक्तियां प्रसद के समग्र साहित्य को जीवंतता प्रदान करती है।

''चरित्रों से मनुष्य नहीं बनते। मनुष्य चरित्रों का निर्माण करते हैं''[20] कितनी सही और सटिक सूक्ति है इससे समस्त मानव दर्शन हमारे समक्ष प्रत्यक्ष हो गया है।

''मानव समाज के अपने सुख को विस्तृत करना चाहता है और भी केवल अपने सुख से सुखी नहीं होता कभी–कभी दूसरों का दुःखी कर अपमानित करके अपने मान को सुख को प्रतिष्ठित करता है।''[21] यह कथन उस विशद् संवेदना और गहन अनुीाव का दिग्दर्शन कराता है जो समस्त मानवता और उसके जीवन दर्शन को दर्शाता है।

5.3 भाषा के प्रसाद, माधुर्य और ओज गुण

उपन्यासकार प्रसाद की भाषा जहां माधुर्य तथा सुकुमार गुणों से आविष्ट है वहीं प्रसाद गुण जो प्रसन्नता का द्योतक है इस गुण से भी संयुक्त है। ''प्रसन्नका अर्थ है तरल और तल स्पर्शी''[22] वास्तव में प्रसाद की भाषा तरलता से संवलित तल स्पर्शी है। पढ़ते ही लेखक क्या कहना चाहता है उस अर्थ की प्रतीती इन उपन्यासों की विशेषता है। ''जीवन का सत्य है प्रसन्त्ता। वह प्रसन्नता और आनन्द की लहरों से निमग्न हो गई''[23] यह कथन भाषा के प्रसाद गुण युक्त है ''जिस मुझ को पढ़ते ही पढ़ते अनुभव हो कि यद्यपि भाव बड़ा गंभीर है पर अर्थ पढ़ते–पढ़ते ही स्वतः स्पष्ट हो उठता है उसे प्रसन्न (प्रसाद गुण) गद्य कहते हैं।''[24] भाषा का प्रसाद गुण चित्त में शीघ्र व्याप्त हो रचना का बोध करा देता है। कृतिकार की काव्यात्मक भाषा ने भाषा को माधुर्य गुण से भी ओत–प्रोत किया है। ''जुही की प्यालियों की मकरन्द–मदिरा पीकर मधुपों को टोलियां लड़खड़ा रही थी''[25] प्रसाद और माधुर्य गुण उपन्यासों की भाषा में परिलक्षित है साथ ही ओज गुण से युक्त भाषा के दर्शन भी होते हैं। ऐतिहासिक उपन्यास इरावती में कहीं कहीं भाषा का यह गुण भी परिलक्षित होता है।

5.4 स्वाभाविक शब्द चयन

कृतिकार अपने भावों को प्रकट करने के लिए विशेष शब्द का चयन करता है ताकि उसकी विशेष भाषा द्वारा पाठक उसके उसी संवेदनात्मक स्तर तक पहुंचे जहां लेखक ने उसे अनुभव किया। अनेकानेक पयार्यवाचियों के होते हुए भी किसी विशेष शब्द का चयन प्रसाद ने अपनी कृतियों में किया है। ''आपकी लौंडी है अभी तो तालीम भी अच्छी तरह नहीं लेती क्या कहुं, बाबू साहब, बड़ी बोदी है''[26] स्त्री व्यापाररत कुटनी द्वारा कहा गया यह कथन स्वाभाविक है। लड़की की बजाय लौंडी, शिक्षा के स्थान पर तालीम शब्दों का चयन अच्छा बन पड़ा है क्योंकि इस पात्र द्वारा उपयोग की जाने वाली भाषा का ऐसा

ही होना अपेक्षित था। ये शब्द चयन अनुकूल है। इस प्रकार कुछ शब्दों के चयन से लेखक का मंतव्य सहजता से स्पष्ट हो जाता है और लेखक के भाव, वह जो कहना चाहता है उसे पाठक इसी शब्द चयन से आसानी से समझा जाता है।

5.5 भाषा का विचलन रूप

विशिष्ट शब्द चयन के साथ–साथ कृतिकार अपने भावों को प्रकट करने के लिए भाषा को विचलन रूप को प्रयोग में लाता है। प्रसाद के उपन्यासों में इस भाषा रूप का पर्याप्त निदर्शन होता है। ''करारे पर सरसों के खेत में बासन्ती चादर बिछी थी।''[27] गद्य में काव्यात्मकता भाषा के विचलन को ही परिलक्षित कराती है। प्रकृति के इस चित्र का सीधा वर्णन न कर मानवीयकरण रूप को अपनाकर लेखक ने भाषा के विचलन को ही दर्शाया है।

''कलेजा रोने लगता है, हृद्‌य कचोटने लगता है आंखे छटपटा कर उसे देखने के लिए बाहर निकलने लगती है''[28] कलेजा नहीं रोता अपितु आंखे रोती है। आंखे अपनी जगह स्थिर स्थित ही रहती है। इच्छित वस्तु देखने हेतु बाहर नहीं निकलती है। यह सब लेखक ने अति दुःख को दर्शाने के लिए ही कहा है। यहां भाषा विचलित ही तो होती है अतिश्योक्ति भी भाषा के विचलन का एक उदाहरण है।

5.6 भाषा की स्वाभाविकता और सहजता

प्रसाद के उपन्यासों की भाषा में सहजता, सुघड़ता और स्वाभाविकता का गुण भी है। विचारधर्मिता और भाव धर्मिता का संतुलन भी भाषा के वैभव में वृद्धि करता है। इन कृतियों की भाषा जहां सामान्यत्व से आविष्ठ है वहीं साहित्यिकता के भी दर्शन कराती है। भाषा में अभिद्या लक्षणा और व्यंजना रूपों का सहज समोवश है।

'तितली' का ग्रामीण परिवेश उसकी भाषा में भी झलकता है ''डेढ़ सरे धुमची, एक बोझा महुआ का पत्ता और एक खांचा कड़ा''[29] कहना न होगा भाषा की ऐसी स्वाभाविकता के कारण ग्रामीण परिवेश जीवंत हो उठा है।

ऐतिहासिक उपन्यास 'इरावती' में मौर्य साम्राज्य का अन्त और शुंग वंश के उत्थान की कथा है। उपन्यास की भाषा कलानुरूप और परिवेश परिवेष की उपज है। राजसभा का वर्णन अपने समय को जीवंत करता हुआ प्रतीत होता है। ''बाहरी ऊंचे स्तंभों के सहारे भीषण भाले लिये हुए प्रहरी मूर्ति से खड़े थे। सीढ़ियों पर धनुर्धरों की पंक्ति फिर नीचे विशाल प्रांगण के अश्वरोहियों के कई झुण्ड थे, जिनके खुले हुए खड़ग से प्रभात के आलोक में तीव्र प्रभा झलक रही थी। आज साम्राज्य परिषद का विशेष आयोजन था''[30] भाषा की समयानुरूप स्वाभाविकता के दर्शन होते हैं ऐसी भाषा भी कृति की इतिहासबद्धता को सत्यापित करती है।

इन कृतियों में दूसरी भाषाओं के शब्द स्वाभाविक रूप से आ गये हैं जिन्होंने कृति को सहज भाषा सौन्दर्य से सुशोभित किया है। अंग्रेजी उर्दू इत्यादि भाषाओं के शब्द बिना प्रयास के आ गये हैं। रोजमर्रा की जिन्दगी में प्रयुक्त होने वाले शब्दों में कृतियों की विश्वसनीयता और स्वाभाविकता बढ़ी है। अंग्रेजी के हेण्डबेग, हॉस्टल, स्कूल, कॉलेज, स्टाम्प, चर्च, स्टेशन, फाइन, प्रेक्टिस, कलेक्टर, मेम, प्रभृति शब्दों का सहज प्रयोग उपन्यास में हुआ है। इसी प्रकार उर्दू के शब्दों का भी व्यापक प्रयोग हुआ है। तालीम, इजलास, बेगम, मेहरबानी, इज्जत, तहकीकात, इत्यादि उर्दू के शब्दों ने भाषा को साधारणीकृत किया है।

इसी प्रकार ऐतिहासिक उपन्यास इरावती में भी तत्कालीन शब्दों का व्यापक प्रयोग हुआ है। तत्कालीन सामाजिक, धाार्मिक राजनैतिक शब्दों ने कृति की स्वाभाविकता में अभिवृद्धि की है। संधि विग्रहिक, दौवरिक, महादण्डनायक, महानायक इसी तरह धार्मिक शब्दों प्रवारणा, चक्रम, भिझुणी विहार, शिक्षमणा, महास्थविर इत्यादि शब्दों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। इन सभी शब्दों से अतीत साकार हो गया है; साथ ही कृति की भाषा की सहजता भी बढ़ी है। इस उपन्यास की भाषा दोनों उपन्यासों की तुलना में बहुत ही सघन और सधी हुई है प्रतीत होती है।

इन सभी कृतियों की भाषा में मुहावरों का सहज सटीक और सौन्दर्यमय प्रयोग हुआ है। आंखों में हीरे का पानी चमकना, दाल न गलना, उल्टे पैर लौटकर भागना, भाड़ में झोंकना, पानी फिरना, धरती पर पैर न पड़ना इत्यादि मुहावरों ने उपन्यास के भाषिक वेभव में चार चांद लगाये हैं।

इस प्रकार हम कह सकते है कि प्रसाद की भाषा अपने युग की प्रतिनिधि भाषा है उनकी भाषा की परिपक्वता में कोई भी सन्देह नहीं है ''प्रसाद की भाषा शैली कवि और चिंतक की भाषा शैली है..... भाषा उनकी अपनी है इतनी विशिष्ट है कि उनके सिवा किसी की हो ही नहीं सकती। उसके मौलिक तत्व उनके व्यक्तित्व से पूर्णतः संयोजित है इसमें सन्देह नहीं कि प्रसाद की सबसे बड़ी शक्ति उनकी भाषा शैली है।''[31] कहना न होगा कि प्रसाद की भाषा एक अलग ही सौन्दर्य और

वैशिष्ट्य से सम्पन्न है। कहीं उनकी भाषा यथार्थ के दर्शन कराती हुई पूर्णतः अभिधात्मक प्रतीत होती है तो कहीं भावुक दृश्यों को दर्शाती हुई लक्षणा और व्यंजना से परिपूरित लगती है। कहीं कल्पना के वैभव से गगन को छूती है तो कहीं यथार्थ के दर्शन से हमारे हृदय को बेधती हुई प्रतीत होती है। कलात्मकता से आविष्ट भाव धर्मिता और विचार धर्मिता से युक्त हो उनकी भाषा संस्कृत गर्भित तत्सम प्रधान, अलंकारिक और विभिन्न भाषायी गुणों से ओत–प्रोत परिलक्षित होती है। ''वे उपन्यासों और कहानियों में वर्तमान युग की यथार्थता को स्पर्श करते हैं तो उनकी भाषा में जीवन की वस्तु स्थिति सिमट आती है, वाक्य छोटे–छोटे हो जाते हैं। अलंकरण की प्रवृत्ति दब जाती है। सरलता और ऋजुता विन्यास की विशेषता बन जाती है। व्यक्तित्व विधान का दृश्यांकन के समय प्रसाद वर्णमय चित्र खींच देते हैं। अतीत के खण्डहरों में विचरण करते समय उनकी भाषा कल्पना की विभूति से भर जाती है। काव्यात्मक और भाव प्रधान स्थलों पर तो उनकी भाषा की स्निग्धता, प्रवाह, भाव प्रवणता, शब्द चयन कोमलकान्त पदावली देखते ही बनती है। प्रसाद की कला कोमल एवं भयानक प्रत्यक्ष एवं रहस्य सभी प्रकार की वृत्तियों को मूर्त कर देती है।''[32]

निष्कर्ष :–

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रसाद की भाषा अपने आप में विशिष्टता से सम्पन्न है। यथार्थ से प्रेरित सत्य को अंकित करने में समर्थ, जीवन धर्मी गंध से रची बसी तथा अतीत की गोद में जाने पर कल्पना प्रवणता से सुशोभित भाषा है। उनके तीनों ही उपन्यास की भाषा अपने अलग–अलग भाषायी वैभव से सुशोभित है। उनकी भाषागत मौलिकता हम मात्र उनके उपन्यासों में ही नहीं अपितु उनका समग्र रचना संसार उनकी नवीन विशिष्ट रचना धर्मिता को निदर्शिता कराता है। उनके उपन्यासों में उनका भावुक कवि हृद्‌य, प्रकृति प्रेम, भावाभिव्यक्ति, चित्रात्मकता, कल्पना प्रवणता साथ विचारात्मकता दार्शनिक आध्यात्मिकता और गूढ़ जीवन दर्शन साकार हुआ है। प्रसाद की भाषा अपने आप में पूर्ण, आधारभूत औपन्यासिक भाषायी गुणों से संयुक्त, कलात्मकता का विशेष आग्रह लिये हुए अपने आप में एकदम विशिष्ट किन्तु उतना ही स्वाभाविकता लिये, उनकी वैभवमयील शास्त्रीयता, किन्तु साथ ही सहजता से सम्पन्न उनकी भाषा, वास्तव में अपने युग की ही नहीं आज के युग की भी उत्कृष्ट भाषा है। उनके साहित्यकार रूप की प्रसिद्धि का एक आधार उनकी सुदृढ़ और सुलझी हुई भाषा है जो हमेशा हिन्दी प्रेमियों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बनी रहेगी।

संदर्भ :

1. अज्ञेय – शेषा
2. कुबेरनाथराय – गंधमादन पृष्ठ 10
3. रामचन्द्र तिवारी – हिन्दी का गद्य साहित्य पृष्ठ 432
4. कंकाल पृष्ठ 32
5. इरावती पृष्ठ 56
6. कंकाल पृष्ठ 30
7. तितली पृष्ठ 65
8. कंकाल पृष्ठ 15
9. तितली पृष्ठ 117
10. कंकाल पृष्ठ 25
11. तितली पृष्ठ 118
12. तितली पृष्ठ 118
13. तितली पृष्ठ 129
14. इरावती पृष्ठ 23
15. नन्द दुलारे वाजपेयी – जयशंकर प्रसाद पृष्ठ 44
16. कंकाल पृष्ठ 53
17. कंकाल पृष्ठ 16
18. इरावती पृष्ठ 36
19. डा. रामरतन भटनागर – प्रसाद साहित्य और समीक्षा पृष्ठ 237
20. इरावती पृष्ठ 95
21. तितली पृष्ठ 46
22. कुबेरनाथराय – गंधमाधन पृष्ठ 64 (निबंधसंग्रह)

23. तितली पृष्ठ 155
24. कुबेरनाथराय – गंधमाधन पृष्ठ 64
25. कंकाल पृष्ठ – 30
26. कंकाल पृष्ठ – 17
27. तितली पृष्ठ – 123
28. कंकाल पृष्ठ 88
29. तितली पृष्ठ 10
30. इरावती पृष्ठ 27
31. रामरतन भटनाकर – प्रसाद साहित्य और समीक्षा पृष्ठ 237
32. हिन्दी का गद्य साहित्य – रामचन्द्र तिवारी पृष्ठ 432